

59 - सूरह हथ्र



सूरह हथ्र के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मदनी है, इस में 24 आयतें हैं।

- इस सूरह की दूसरी आयत में हथ्र का शब्द आया है। जिस का अर्थ: एकत्र होना है। और इसी से यह नाम लिया गया है।
- इस में अल्लाह और उस के रसूल के विरोधियों को मदीना के यहूदी कबीले के अपमानकारी परिणाम से चेतावनी दी गयी है।
- आरंभ में बताया गया है कि आकाशों तथा धरती की प्रत्येक चीज़ अल्लाह की पवित्रता का गान करती है। फिर यहूदी कबीले बनी नज़ीर के, अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करने का परिणाम बताया गया है। और ईमान वालों को कुछ निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 11 से 17 तक में उन मुनाफ़िकों की पकड़ की गई है जो यहूदियों से मिल कर इस्लाम और मुसलमानों के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे थे।
- अन्त में प्रभावी शिक्षा तथा अल्लाह से डरने की बातों का वर्णन किया गया है। तथा आज्ञा पालन और अवैज्ञा का अन्तर बताया गया है।
- इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने कहा: कि यह सूरह बनी नज़ीर के बारे में उतरी। इसे सूरह बनी नज़ीर कहो। (सहीह बुख़ारी: 4883)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अल्लाह की पवित्रता का गान किया है उस ने जो भी आकाशों तथा धरती में है। और वह प्रभुत्वशाली गुणी है।
2. वही है जिस ने अहले किताब में से काफ़िरों को उन के घरों से पहले ही आक्रमण में निकाल दिया। तुम ने नहीं समझा था कि वे निकल जायेंगे, और

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ
دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ يَخْرُجُوا وَظَنُّوا
أَنْهُمْ لَا تُغَارِبُ أَعْيُنُهُمْ مِنَ اللَّهِ فَآتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ

उन्होंने समझा था कि रक्षक होंगे उन के दुर्गा^[1] अल्लाह से। तो आ गया उन के पास अल्लाह (का निर्णय)। ऐसा उन्होंने सोचा भी न था। तथा डाल दिया उन के दिलों में भय। वह उजाड़ रहे थे अपने घरों को अपने हाथों से तथा ईमान वालों के हाथों^[2] से। तो शिक्षा लो, हे आँख वालो!

3. और यदि अल्लाह ने न लिख दिया होता उन (के भाग्य में) देश निकाला, तो उन्हें यातना दे देता संसार (ही) में। तथा उन के लिये आखिरत (परलोक) में नरक की यातना है।

4. यह इसलिये कि उन्होंने विरोध किया अल्लाह तथा उस के रसूल का, और जो विरोध करेगा अल्लाह का तो निश्चय अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا وَقَدْ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرَّعْبُ
يُخَوِّتُوْنَ بِمَوْتِهِمْ يَأْتِيهِمْ وَأَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ
فَاعْتَبِرُوا يَا أُولِيَ الْاَبْصَارِ ۝

وَلَوْلَا اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَاءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي
الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ۝

ذٰلِكَ يَأْتِيهِمْ شَاقُّ اللّٰهِ وَرِسُوْلُهُ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللّٰهَ
فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝

- 1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जब मदीना पहुँचे तो वहाँ यहूदियों के तीन कबीले आबाद थे: बनी नज़ीर, बनी कुरैज़ा तथा बनी कैनुका। आप ने उन सभी से संधि कर ली। परन्तु वह इस्लाम के विरुद्ध षड्यंत्र रचते रहे। और एक समय जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बनी नज़ीर के पास गये तो उन्होंने ऊपर से एक पत्थर फेंक कर आप को मार डालने की योजना बनाई। जिस से बह्वी द्वारा अल्लाह ने आप को सूचित कर दिया। उन के इस संधि भंग तथा षड्यंत्र के कारण आप ने उन पर आक्रमण किया। वह कुछ दिन अपने दुर्गों में बंद रहे। अन्ततः उन्होंने प्राण क्षमा के रूप में देश निकाल को स्वीकार किया। और यह मदीना से यहूद का प्रथम देश निकाला था। यहाँ से वह खैबर पहुँचे और अदरणीय उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के युग में उन्हें फिर देश निकाला दिया गया। और वह वहाँ से शाम चले गये जो हश्र का मैदान होगा।
- 2 जब वे अपने घरों से जाने लगे तो घरों को तोड़-तोड़ कर जो कुछ साथ ले जा सकते थे ले गये। और शेष सामान मुसलमानों ने निकाला।

5. (हे मुसलमानो!) तुम ने नहीं काटा^[1] कोई खजूर का वृक्ष और न छोड़ा उसे खड़ा अपने तने पर, तो यह सब अल्लाह के आदेश से हुआ। और ताकि वह अपमानित करे पथभ्रष्टों को।
6. और जो धन दिला दिया अल्लाह ने अपने रसूल को उन से, तो नहीं दौड़ाये तुम ने उस के लिये घोड़े और न ऊँट। परन्तु अल्लाह प्रभुत्व प्रदान कर देता है अपने रसूल को जिस पर चाहता है, तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
7. अल्लाह ने जो धन दिलाया है अपने रसूल को इस बस्ती वालों^[2] से, वह अल्लाह तथा रसूल, तथा (आप के) समीपवर्तियों तथा अनाथों और निर्धनों तथा यात्रियों के लिये है। ताकि वह फिरता न रहे^[3] जाये

مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لَيْنَةٍ أَوْ مَرَكَمَةٍ وَهَاقِمَةٌ عَلَى أَصُولِهَا
فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيُخْزِيَ الْفَاسِقِينَ ٥

وَمَا آفَاءُ اللَّهِ عَلَى رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ
مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُسَلِّطُ رَسُولَهُ
عَلَى مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ٦

مَا آفَاءُ اللَّهِ عَلَى رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرَى فَلِلَّهِ
وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ
وَابْنِ السَّبِيلِ لَئِنْ لَا يَكُنْ دُولُهُ بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ
وَمَنْكُمُومًا أَتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ
فَانْتَهُوا وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ٧

- 1 बनी नजीर के घिराव के समय नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आदेशानुसार उन के खजूरों के कुछ वृक्ष जला दिये और काट दिये गये और कुछ छोड़ दिये गये। ताकि शत्रु की आड़ को समाप्त किया जाये। इस आयत में उसी का वर्णन किया गया है। (सहीह बुखारी: 4884)
- 2 अर्थात् यहूदी कबीला बनी नजीर से जो धन बिना युद्ध के प्राप्त हुआ उस का नियम बताया गया है कि वह पूरा धन इस्लामी बैतुल माल का होगा उसे मुजाहिदों में विभाजित नहीं किया जायेगा। हदीस में है कि यह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये विशेष था जिस से आप अपनी पत्नियों को खर्च देते थे। फिर जो बच जाता तो उसे अल्लाह की राह में शस्त्र और सवारी में लगा देते थे। (बुखारी: 4885)
- इस को फ़ैय का माल कहते हैं जो ग़नीमत के माल से अलग है।
- 3 इस में इस्लाम की अर्थ व्यवस्था के मूल नियम का वर्णन किया गया है। पूँजी पति व्यवस्था में धन का प्रवाह सदा धनवानों की ओर होता है। और निर्धन दरिद्रता की चक्की में पिसता रहता है। कम्युनिज़्म में धन का प्रवाह सदा शासक

तुम्हारे धनवानों के बीच और जो प्रदान कर दें रसूल, तुम उसे ले लो और रोक दें तुम को जिस से तो तुम रुक जाओ। तथा अल्लाह से डरते रहो, निश्चय अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

8. उन निर्धन मुहाजिरों के लिये है जो निकाल दिये गये अपने घरों तथा धनों से। वह चाहते हैं अल्लाह का अनुग्रह तथा प्रसन्नता, और सहायता करते हैं अल्लाह तथा उस के रसूल की, यही सच्चे हैं।

9. तथा उन लोगों^[1] के लिये (भी) जिन्होंने आवास बना लिया इस घर (मदीना) को तथा उन (मुहाजिरों के आने) से पहले ईमान लाये, वह प्रेम करते हैं उन से जो हिजरत कर के आ गये उन के यहाँ। और वे नहीं पाते अपने दिलों में कोई आवश्यकता उस की जो उन्हें दिया जाये। और प्रथामिकता देते हैं (दूसरों को) अपने ऊपर चाहे स्वयं भूखे^[2] हों। और जो

لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا وَيَنْصَرُّونَ إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ أُولَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ۝

وَالَّذِينَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِمَّا أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَنْ يُوقِ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

वर्ग की ओर होता है। जब कि इस्लाम में धन का प्रवाह निर्धन वर्ग की ओर होता है।

- 1 इस से अभिप्राय मदीना के निवासी: अनुसार है। जो मुहाजिरीन के मदीना में आने से पहले ईमान लाये थे। इस का यह अर्थ नहीं है कि वह मुहाजिरीन से पहले ईमान लाये थे।
- 2 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास एक अतिथि आया और कहा: हे अल्लाह के रसूल! मैं भूखा हूँ। आप ने अपनी पत्नियों के पास भेजा तो वहाँ कुछ नहीं था। एक अन्सारी उसे घर ले गये। घर पहुँचे तो पत्नि ने कहा: घर में केवल बच्चों का खाना है। उन्होंने परस्पर प्रामर्श किया कि बच्चों को बहला कर सुला दिया जाये। तथा पत्नि से कहा कि जब अतिथि खाने लगे तो

बचा लिये गये अपने मन की तंगी से, तो वही सफल होने वाले हैं।

10. और जो आये उन के पश्चात् वे कहते हैं: हे हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे तथा हमारे उन भाईयों को जो हम से पहले ईमान लाये। और न रख हमारे दिलों में कोई बैर उन के लिये जो ईमान लाये। हे हमारे पालनहार! तू अति करूणामय दयावान् है।

11. क्या आप ने उन्हें^[1] नहीं देखा जो मुनाफ़िक (अवसरवादी) हो गये, और कहते हैं अपने अहले किताब भाईयों से कि यदि तुम्हें देश निकाला दिया गया तो हम अवश्य निकल जायेंगे तुम्हारे साथ। और नहीं मानेंगे तुम्हारे बारे में किसी की (बात) कभी। और यदि तुम से युद्ध हुआ तो हम अवश्य तुम्हारी सहायता करेंगे। तथा अल्लाह गवाह है कि वह झूठे हैं।

12. यदि वे निकाले गये तो यह उन के

وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَأْفِكُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِتْنَةً أَحَدًا أَبَدًا وَإِنْ قُوتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ

لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا تَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِنْ قُوتِلُوا

तुम दीप बुझा देना। उस ने ऐसा ही किया। सब भूखे सो गये और अतिथि को खिला दिया। जब वह अन्सारी भोर में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास पहुँचे तो आप ने कहा: अमुल पुरुष (अबू तलहा) और अमुल स्त्री (उम्मे सुलैम) से अल्लाह प्रसन्न हो गया। और उस ने यह आयत उतारी है। (सहीह बुखारी: 4889)

- 1 इस से अभिप्राय अब्दुल्लाह बिन उबेय्य मुनाफ़िक और उस के साथी हैं। जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यहूद को उन के वचन भंग तथा षड्यंत्र के कारण दस दिन के भीतर निकल जाने की चेतावनी दी, तो उस ने उन से कहा कि तुम अड़ जाओ। मेरे बीस हजार शस्त्र युवक तुम्हारे साथ मिल कर युद्ध करेंगे। और यदि तुम्हें निकाला गया तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जायेंगे। परन्तु यह सब मैखिक बातें थीं।

साथ नहीं निकालेंगे। और यदि उन से युद्ध हो तो वे उन की सहायता नहीं करेंगे। और यदि उन की सहायता की (भी) तो अवश्य पीठ दिखा देंगे, फिर (कहीं से) कोई सहायता नहीं पायेंगे।

13. निश्चय अधिक भय है तुम्हारा उन के दिलों में अल्लाह (के भय) से। यह इसलिये कि वे समझ-बूझ नहीं रखते।

14. वह नहीं युद्ध करेंगे तुम से एकत्र हो कर परन्तु यह कि दुर्ग बंद बस्तियों में हों, अथवा किसी दीवार की आड़ से। उन का युद्ध आपस में बहुत कड़ा है। आप उन्हें एकत्र समझते हैं जब कि उन के दिलों में अलग अलग हैं। यह इसलिये कि वह निर्बोध होते हैं।

15. उन के समान जो उन से कुछ ही पूर्व चख चुके^[1] हैं अपने किये का स्वादा और इन के लिये दुखदायी यातना है।

16. (उन का उदाहरण) शैतान जैसा है कि वह कहता है मनुष्य से कि कुफ़र कर, फिर जब वह काफ़िर हो गया तो कह दिया कि मैं तुझ से विरक्त (अलग) हूँ। मैं तो डरता हूँ अल्लाह सर्वलोक के पालनहार से।

17. तो हो गया उन दोनों का दुष्परिणाम यह कि वे दोनों नरक में सदावासी रहेंगे। और यही है अत्याचारियों का कुफल।

لَا تَنْصُرُوهُمْ وَلَٰكِنْ نَّصَرُوهُمْ لِيُوَلُّوا أَدْبَارَهُمْ
ثُمَّ لَا يَنْصُرُوهُمْ ۝

لَا تَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ
ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ۝

لَا يَقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرَى مُحَصَّنَةٍ
أَوْ مِنْ وَرَاءِ جُدُرٍ بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ
تَحْسِبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ذَٰلِكَ
بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ۝

كَمَثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاقُوا
وَبَالَ أَمْرُهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

كَمَثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اكْفُرْ فَلَمَّا
كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِنْكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ
الْعَالَمِينَ ۝

فَكَانَ عَاقِبَتُهُمَا أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا
وَذَٰلِكَ جَزَاُ الظَّالِمِينَ ۝

1 इस में संकेत बद्र में मक्का के काफ़िरों तथा कैनुकाअ कबीले की पराजय की ओर है।

18. हे लोगो जो ईमान लाये हो! अल्लाह से डरो, और देखना चाहिये प्रत्येक को कि उस ने क्या भेजा है कल के लिये। तथा डरते रहो अल्लाह से, निश्चय अल्लाह सूचित है उस से जो तुम करते हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

19. और न हो जाओ उन के समान जो भूल गये अल्लाह को तो भुला दिया (अल्लाह ने) उन्हें अपने आप से, यही अवैज्ञकारी है।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنْسَاهُمْ أَنْفُسَهُمْ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝

20. नहीं बराबर हो सकते नारकी तथा स्वर्गी। स्वर्गी ही वास्तव में सफल होने वाले हैं।

لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝

21. यदि हम अवतरित करते इस कुर्आन को किसी पर्वत पर तो आप उसे देखते कि झुका जा रहा है तथा कण-कण होता जा रहा है अल्लाह के भय^[1] से। और इन उदाहरणों का वर्णन हम लोगों के लिये कर रहे हैं ताकि वह सोच-विचार करें। वह खुले तथा छुपे का जानने वाला है। वही अत्यंत कृपाशील दयावान् है।

لَوْ أَنزَلْنَاهُذَا الْقُرْآنَ عَلَىٰ جَبَلٍ لَّرَأَيْنَاهُ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝

22. वह अल्लाह ही है जिस के अतिरिक्त कोई (सत्य) पूज्य नहीं है।

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝

23. वह अल्लाह ही है जिस के अतिरिक्त नहीं है^[2] कोई सच्चा वंदनीय। वह

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ أَلَهُوَ الْمَلِكُ

1 इस में कुर्आन का प्रभाव बताया गया है कि यदि अल्लाह पर्वत को ज्ञान और समझ-बुझ दे कर उस पर उतारता तो उस के भय से दब जाता और फट पड़ता। किन्तु मनुष्य की यह दशा है कि कुर्आन सुन कर उस का दिल नहीं पसीजता। (देखिये: सूरह बकरा, आयत: 74)

2 इन आयतों में अल्लाह के शुभनामों और गुणों का वर्णन कर के बताया गया है

सब का स्वामी, अत्यंत पवित्र,
सर्वथा शान्ति प्रदान करने वाला,
रक्षक, प्रभावशाली, शक्तिशाली
बल पूर्वक आदेश लागू करने वाला,
बड़ाई वाला है। पवित्र है अल्लाह उस
से जिसे वे (उस का) साझी बनाते हैं।

24. वही अल्लाह है पैदा करने वाला,
बनाने वाला, रूप देने वाला। उसी
के लिये शुभनाम हैं, उस की
पवित्रता का वर्णन करता है जो (भी)
आकाशों तथा धरती में है, और वह
प्रभावशाली हिक्मत वाला है।

الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهِيمُ الْعَزِيزُ
الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٢٤﴾

هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ
الْحُسْنَى يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٥﴾

कि वह अल्लाह कैसा है जिस ने यह कुर्आन उतारा है। इस आयत में अल्लाह के ग्यारह शुभनामों का वर्णन है। हदीस में है कि अल्लाह के निचावे नाम हैं, जो उन्हें गिनेगा तो वह स्वर्ग में जायेगा। (सहीह बुखारी: 7392, सहीह मुस्लिम: 2677)